

Saraj



Rakhi Organza Saroski  
VOL-4



1001





1002







1004



1005





1006



Saroj



1001



1002



1003

1004



1005



1006



जो न कभी हर्षित होता है, न द्वेष करता है,  
न शोक करता है, न कामना करता है  
तथा जो श्रुत और अश्रुत सम्पूर्ण कर्मों का त्यागी है-  
वह भक्तिपुक्त पुरुष गुणको प्रिय है।